दामिनी की मौत की सुन, मेरे दादा जी की बताई वो कहानी याद आ गई:

बात उस जमाने की है जब हम गुलाम थे| उस वक्त विदेशी कहे जाने वाले शासकों नें हिन्दू और सिख समाज की औरतों पर ऐसे नियम थोंपे कि उनकी नई-नवेली ब्याहता बहु-बेटियों को ससुराल जाते वक्त ढोला इनके दर पे रोक इनके यहाँ पूजा करके जाना होगा| आज की दामिनी की मौत ऐसी ही एक वीरांगना की कहानी याद दिलाती है, आज में और उस वक्त में फर्क सिर्फ इतना है कि उस वक्त हम किसी के गुलाम थे और आज स्वतंत्र|

वह वीरांगना "मलिक गोत्री जाट -गठ्वाला खाप" की बेटी थी, जिसका ढोला आज के रोहतक जिले के "मोखरा" गाँव से उठ के चला था और रास्ते में पड़ने वाली कलानौर की रियासत के आगे जा के रोक दिया गया| लड़की ने पूछा कि मेरा ढोला यहाँ क्यों रोक गया, तो कहा गया कि आपको यहाँ के नवाब के यहाँ कोला पूजन करना होगा| तो लड़की ने जवाब माँगा कि "मैं जाटों के यहाँ ब्याही गई हूँ या नवाबों के?" पर हर सवाल का नकारात्मक उत्तर मिलते देख, वो लड़की अपनी बहादुरी दिखाते हुए वहाँ से बच निकली और आकर अपने पिता से पूछा कि "मैं जाटों के यहाँ ब्याही थी या नवाबों के?"

लड़कि ने कहा कि मेरी खाप के मुखिया तक मेरा संदेसा पहुँचाया जाए कि अगर वो अपनी बेटियों की रक्षा नहीं कर सकते तो हमें पैदा करना छोड़ दें और दूरस्थ जंगलों में जा सन्यास ले लें| उस वीरांगना का यह सन्देश इतना तीव्र और तीखा प्रहार करता हुआ गया कि सम्पूर्ण समाज को ठीक उसी तरह हिला के झकझोर गया जैसे आज दामिनी की मौत ने पूरे देश को झकझोर के रख छोड़ा है|

और गठ्वाला खाप ने इसका गंभीर संज्ञान लेते हुए, सारी खापों को निमन्त्रण भेजा, जिसमें आज की महम-चौबीसी, बहु-अठगामा और सांगवान खाप से ले तमाम उत्तर-भारत की खापों ने एक साथ बैठ मंथन किया और निर्णय लिया कि कलानौर रियासत ही तोड़ दी जाए| और जैसा कि खाप समाज में नेत्रित्व ही एक ऐसी चीज होती थी जिसपे कभी लड़ाई नहीं होती थी, एकाधिकार नहीं होता था तो इस सर्व-जातीय सर्व-खाप द्वारा होने जा रहे इस महय्य्म की बागडोर दी गई सांगवान खाप के दादा चौधरी रिढेल सिंह सांगवान के हाथों और ऐसा जबर्दस्त गुस्सा फूटा खाप सेनाओं का कि भरी-दुपहरी में कलानौर रियासत के किले की चूलें हिल दी गई और देखते-देखते वहाँ के सूबेदारों से ले नवाबों तक को मौत के घाट उतार उस रियासत को ही खत्म कर, अपने समाज की बहु-बेटियों को उनके इस अत्याचार से मुक्ति दे दी|

और इस विजय से खुश हो सर्व-जातीय सर्व-खाप ने इस जीत के पुरोधा रहे दादा चौधरी रिढेल सिंह सांगवान को वह जमीन जिसपे कि खापों की सेना ने पड़ाव दाल कलानौर रियासत तोड़ी थी, दादा को सांगवान गोत्री गाँव बसाने के लिए प्रोत्साहन और ईनाम हेतु दी| और आज उसी जमीन पर रोहतक जिले का "गढ़ी-टेकणा" गाँव बसा हुआ है|

तो आज भी वक्त आ गया है कि हो सके तो खापें इस मौके को ना चूकें, उस वक़्त विदेशी वहिसयों को तत्काल

दिया था आज अपने ही समाज में बन बैठे वहिसयों की खबर लेने का मौका है| और यही खापों का इतिहास रहा है कि वो वैसे तो जमीनी स्तर पर काम करती हैं लेकिन जब-जब राज-सत्ता रास्ते से भटकी उसको रास्ते पे लाने हेतु इन्होनें ऐसे ही जौहर किये| और आज का हिंदुस्तान भी ऐसे ही जौहर की आस लगाए आप-हम सबकी तरफ टकटकी बांधे देख रहा है|

Dated: 29/12/2012